



DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY: DR. ANANDESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)

MO- 9415376545

B.A PART-I (Sub./Gen.)

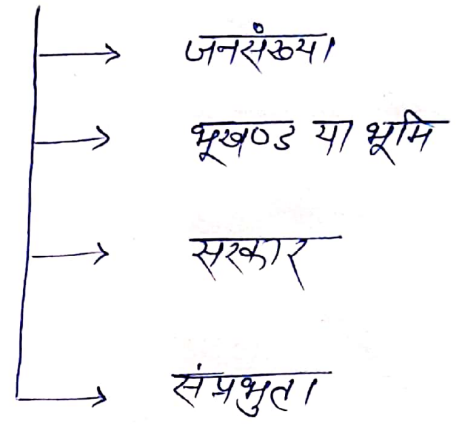
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.....

Date 17/04/20

राज्य ज्यौर इसके प्रमुख तत्व
(State : Nature and Elements)

राज्य के सामान्यतः चार तत्व माने जाते हैं

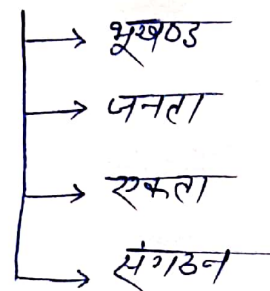


यद्यपि विभिन्न विचारकों में राज्य के तत्वों के विषय में अनेक विभिन्नता भी है, जैसे-

बिलोवी ने राज्य के तीन तत्व बताए हैं-

- (A) सामाजिक दृष्टि से श्रुता के क्षेत्र में आवृद्ध एक समुदाय या समाज ।
- (B) एक राजनीतिक व्यवस्था या सरकार ।
- (C) एक लिखित या अलिखित संविधान जिसके द्वारा राज्य के पदाधिकारियों के दायित्वों को परिभाषित किया जा सके ।

लम्पटशाली के शब्दों में राज्य के आवश्यक तत्व हैं-



(1)

PTO



Ref. No.....

Date.....17/04/20.....

सिजकि ने रज्प के तीन तत्व बताएँ हैं -

- (i) भूखण्ड या भूक्षेत्र ।
- (ii) जनता
- (iii) सरकार या शासन तंत्र ।

विचारक गार्नर और गेटिक जैसे प्रमुख विद्वानों ने भी राज्य के चार तत्व बताए हैं -

- (i) जनसंख्या
- (ii) निश्चित भूक्षेत्र
- (iii) सरकार
- (iv) संप्रभुता

समाप्तः विद्वानों ने उपरोक्त लिखित राज्य के तत्वों के रूप में मान्यता प्रदान की है जिसकी विस्तृत चर्चा निम्नवत दृष्टव्य है -

(1) जनसंख्या - राज्य एक मानवीय समुदाय है। अतएव मनुष्यों के अभाव में इसकी परिकल्पना ही नहीं की जा सकती। राज्य का उद्देश्य मनुष्य की विविधाकारणकताओं की पूर्ति और समाज में व्यवस्था स्थापित करना है। अतएव यह स्वभाविक है कि राज्य में कुछ लोग निकास करते हों। यद्यपि कि राज्य की जनसंख्या कितनी घेनी चाहिए, इस विषय में विद्वानों में अनेक मत-विभिन्नताएँ मौजूद हैं। राजनीतिक दार्शनिक प्लेटो ने अपनी पुस्तक 'The LAWS' में उल्लिखित उपमाद्वारा राज्य की जनसंख्या 5040 मानी है। अरस्तू का कहना था कि जनसंख्या की सीमा अवश्य निश्चित घेनी चाहिए। उसने यह सिद्धांत प्रतिपादित किया कि जनसंख्या न तो अल्पधिक घेनी चाहिए और न ही अल्पधिक कम। अरस्तू के अनुसार राज्य की जनसंख्या इतनी ही घेनी



Ref. No.....

Date...17/04/20.....

चाहिए कि जिसके राज्य के सम्झा भरण-पोषण की सम्झा न पैदा हो
लफा इतनी कम भी नहीं घेनी चाहिए कि राज्य की हीड से सुरक्षा न
हो सके।

विचारक रूसो ने अठर्रा राज्य की जनसंख्या 10,000 निर्धारित की। रूसो
के सम्म लड राष्ट्रीय राज्य की अवधारणा भली-भाँति विडस्थित हो चुकी
थी। ऐसा माना जाता है कि उसने जेनेवा के कैंप के सम्बंध में
उपयुक्त संख्या निर्धारित की थी। अठर्रिड राज्यों में जनसंख्या के मुद्दे
पर व्यापक भिन्नता परिलक्षित होती है। एक ओर चीन और भारत
जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश हैं जबकि दूसरी ओर मालदीव और
सेन मेरिनो जैसे अल्पजनसंख्या वाले देश हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जनसंख्या के सन्दर्भ में अस्तु का
मत ही ज्यादा उचित प्रतीत होता है क्योंकि उसने राज्य की जनसंख्या
राज्य की क्षमता के अनुरूप संतुलित घेने की बात कही थी।

(2) निश्चित भूक्षेत्र या प्रदेश - बिना निश्चित भूक्षेत्र या प्रदेश के राज्य के
अस्तित्व का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि किसी
इच्छिरे राज्य कथ जासके, इसके लिए उसकी जनसंख्या
का स्थाई रूप से किसी भूक्षेत्र का निवासी घेना अनिवार्य है। एलण्डशली ने
कहा है कि "जिस प्रकार राज्य का वैयक्तिक आधार जनता है अनी प्रकार प्रदेश अल्प
भौतिक आधार है।"

विचारक टाल के शब्दों में - "आधुनिक सम्प्रदा की परिस्थितियों जिनके अनुसार
भूमि या सम्प्रदा के साथ सम्बन्ध माना जाता है, एक निश्चित भूमि के अधिकार
को राज्य की अवधारित आवश्यकता बना देती है।" विचारक दुग्बी, विलोकी और
सिले जैसे विद्वान भूक्षेत्र को राज्य का अनिवार्य क्षेत्र नहीं मानते हैं।
क्षेत्र या प्रदेश में केवल स्थल भाग ही नहीं बल्कि इसमें राज्य का सम्झा